

DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST
TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR
PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS+SUB)
PAPER-3 ,UNIT-3,PSYCHOPATHOLOGY OF
EVERYDAY LIFE

LECTURE-23

PSYCHOPATHOLOGY OF EVERYDAY LIFE

दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ

प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कुछ ना कुछ भूले करता है । इसमें से कुछ भूले ऐसी होती है जिसका हमें ज्ञान होता है तथा हम तुरंत ही उन भूलो में सुधार कर लेते है । परन्तु कुछ भूले ऐसी होती है जिससे व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में अज्ञानतावश तथा अनायास कर बैठता है ।ये ऐसी भूले है जि व्यक्ति को निरुदेश्य तथा मात्र संयोगवश होने लगता है ।फ्रायड के अनुसार ऐसी भूले अनायास नहीं होती है बल्कि उनका कारण होता है जो अचेतन में दमित होता है । अचेतन में दमित विरोधी विचार ,कामुक इच्छाएँ, अतृप्त इच्छाएँ,आक्रामक प्रवृत्तियाँ ही इन भूलो का कारण होती है ।अचेतन में दमित ऐसी

प्रवृत्तियाँ इन गलतियों या भूलों द्वारा चेतन में अभिव्यक्त होती है। ऐसी गलतियों को ही फ्रायड ने “दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ” कहा है। फ्रायड ने अपनी पुस्तक साइकोपैथोलॉजी ऑफ़ एवरीडे लाइफ (PSYCHOPATHOLOGY OF EVERYDAY LIFE) जो 1914 में प्रकाशित हुआ, में इन मनोविकृतियों का विस्तृत वर्णन किया है।

फ्रायड ने अनेको तरह की मनोविकृतियों का वर्णन किया है जिनमें निम्नांकित प्रमुख हैं -

(i) बोलने की भूले - प्रायः यह देखा गया है कि दैनिक जीवन में व्यक्ति से बोलने की भूले हो जाया करती है। वह बोलना कुछ चाहता है और बोल कुछ और ही देता है ऐसी गलतियों पर स्वयं व्यक्ति को भी आश्चर्य होता है। इस आश्चर्य का कारण यह है कि ऐसी गलतियों के जन्म का श्रोत अचेतन होता है। फ्रायड के अनुसार अचेतन में दमित इच्छाएं होती हैं। जो इस तरह के भूल के रूप में चेतन में व्यक्त होकर अपना आंशिक संतुष्टि कर लेती हैं। बोलने की भूले के बहुत से उदाहरण हमें दैनिक जीवन में मिलते हैं। जैसे - एक बार एक ऐसी रोगी के लिए डॉक्टर दवा लिख रहा था वह रोगी इलाज के खर्च से काफी परेशान था तो दवा लिखने के समय ही वह बोल उठा कि “हमें इतना भी बिल ना देना जिन्हें मैं निगल ही नहीं पाऊँ” यहाँ बिल से तात्पर्य पिल्स से था। जो की गलती से पिल्स के बजाय बिल

बोला गया | स्पष्ट है की बोलने की भूल अचेतन द्वारा प्रेरित होती है।

(ii) नामों को भूलना – हम अपने दैनिक जीवन में परिचित व्यक्तियों, वस्तुओं तथा स्थानों के नामों को स्थायी या अस्थायी तौर पर भूल जाते हैं | कई बार तो बहुत कोशिश करने के बाद भी उनके नाम याद नहीं आते हैं परन्तु अपने आप फिर बाद में याद आ जाते हैं | यह अस्थायी भूलना का कारण अर्धचेतन होता है | परन्तु स्थायी रूप से भूलना या लम्बे समय तक याद नहीं आने का कारण अचेतन ही होता है | नामों को भूलने के सामान ही हम अन्य बातों को भी भूलते रहते हैं | जैसे- किसी से वादों का भूल जाना , पत्र को डाक-खाने के पत्र-पट्टी में डालना भूलना , किसी से ली गयी वस्तु को लौटाना भुलाना आदि भी हमारे दैनिक जीवन में प्रायः होते रहते हैं इस तरह का भूलना निरर्थक नहीं होता है बल्कि इसका कारण अचेतन या अर्धचेतन होता है | फ्रायड ने कई उदाहरण दे कर यह स्पष्ट किया है की फ्रैंक जो फ्रांस का रहने वाला था भारत वर्ष आया था एक दिन वह अपने प्रिय पालतू कुत्ता के साथ ढेले मार-मार कर खेल रहा था | इस सिलसिले में कुत्ता तालाब में गिर गया लेकिन तब भी वह कुत्ता पर ढेला फेंकने का क्रम जारी रखा | इसका परिणाम यह हुआ की कुत्ता तालाब में डूब कर मर गया | इस दुखद घटना का प्रभाव फ्रैंक के मन पर काफी पड़ा जिसके परिणाम स्वरूप वह अपने देश के सुप्रसिद्ध बाज़ार का नाम जिसका नाम 'pond' था

भूल गया | फ्रैंक को इस बात का एहसास तब हुआ जब उसके दोस्त ने उस बाज़ार से सामान खरीदने की चर्चा की | यद्दपि फ्रैंक उस बाज़ार से काफी परिचित था ,फिर भी जब उसका नाम उसे याद नहीं आया ,तो इस पर उसे काफी आश्चर्य हुआ | यहाँ 'pond' नामक बाज़ार को भूलने का स्पष्ट कारण इस तालाब में हुई वह दुखद घटना थी जिसके परिणाम स्वरूप वह शब्द अचेतन में दमित हो गया था |

(iii) लिखने की भूलें – लिखने की भूलें भी हमारे दैनिक की सामान्य भूलों में से एक है | इस तरह की भूल में व्यक्ति लिखना कुछ चाहता है और लिख कुछ और देता है | लिखने की भूलों में इसके आलावा अन्य भूले जैसे अधिक शब्द लिख देना ,सही शब्द के बदले विपरीत शब्द लिख देना, किसी महत्वपूर्ण शब्द का छुट जाना ,बाद के शब्दों को पहले लिखना आदि सम्मिलित होती है | सामान्यतः ऐसी गलतियों का कारण लिखते समय ध्यान ना देना या ध्यान का बंट जाना या भाषा –ज्ञान का अभाव माना गया है |परन्तु फ्रायड ने विश्लेषणात्मक सबूत देकर यह साबित कर दिया है की लिखने की भूलें भी अचेतन की दमित इच्छाओं के कारण ही होती है | जैसे एक नर्स का किसी डॉक्टर से प्रेम हो गया था परन्तु डॉक्टर द्वारा उसे नापसंद कर दिया गया जिसके कारण उसे डॉक्टर को भूल जाना पड़ा |उसने डॉक्टर को एक पत्र लिखा जिसमे उसने

‘doctor’ के स्थान पर ‘dear’ लिख दिया | इस भूल के माध्यम से नर्स ने डॉक्टर के प्रति अचेतन में संचित प्रेम प्रदर्शित किया।

(iv) छपाई की भूलें- छपाई की भूले भी हमारे जीवन को अक्सर देखने को मिलती हैं | अक्सर समाचार-पत्रों, पुस्तकों एवं विज्ञापनों में इस तरह की भूलें देखने को मिलती हैं तथा अनेक बार इन गलतियों का सुधार भी देखने को मिलता है | जैसे- एक बार लंदन के एक समाचार-पत्र में छपा की सभा में “HIS HIGHNESS CLOWN PRINCE” भी उपस्थित थे | ‘CLOWN’ का अर्थ अंग्रेजी में ‘जोकर’ होता है | सचमुच में ‘CLOWN’ के जगह ‘CROWN’ छपना था | अगले दिन सामाचार-पत्र में क्षमा याचना के साथ गलती का सुधार किया गया और छपा “THE CROW PRINCE” भी उपस्थित थे | यहाँ पुनः एक गलती हो गयी – “CROWN PRINCE” के जगह CROW PRINCE (कौआ राजकुमार) छप गया | इस दुहरायी गयी गलती से यह स्पष्ट हो जाता है की प्रेस के प्रायः कर्मचारी में “CROWN PRINCE” के प्रति घृणा की भावना थी |

(v) पहचानने की भूल – हमारे दैनिक जीवन में पहचानने की भूल भी एक महत्वपूर्ण भूल है | ऐसी भूलें किसी वस्तु, स्थान तथा व्यक्ति को पहचानने से सम्बंधित होती हैं | अक्सर देखा है की हम किसी परिचित व्यक्ति को परिचित व्यक्ति या मित्र समझ बैठते हैं तथा किसी परिचित व्यक्ति या वस्तु के उपस्थित रहने

पर भी हम उसे देख नहीं पाते हैं | इसका कारण अचेतन मन में संचित दमित इच्छाएँ ही हैं | फ्रायड के अनुसार जब कोई व्यक्ति अपने प्रिय मित्र को देखना चाहता है तो वह अपरिचित व्यक्ति को ही अपना मित्र समझ बैठता है |

(vi) वस्तुओं को गलत स्थान पर रखना – अक्सर हम वस्तुओं जैसे चाभी , महत्वपूर्ण कागज़ , रुमाल , डायरी , कलम आदि को इधर – उधर रख देते हैं और समय पर जब उन्हें ढूँढते हैं तो वह वस्तु हमें नहीं मिलती है | दैनिक जीवन की इस भूलों के पीछे चेतन की दमित इच्छाएँ सक्रीय होती हैं |

(vii) अनजाने में की गयी क्रियाएं – अक्सर ऐसा होता है की हम चेतन रूप से जो करना चाहते हैं , उसके बदले में हम कोई दूसरी क्रिया कर बैठते हैं और जब इन गलतियों का हमें ज्ञान होता है तो उसका हमें कोई अर्थ ही समझ में नहीं आ पाता है | जैसे हम किसी व्यक्ति को १०० रूपये का नोट देना चाहते हैं परन्तु भूल से पांच सौ रूपये का नोट दे देते हैं |

(viii) सांकेतिक क्रियाएं – व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में कुछ ऐसी सांकेतिक क्रियाएं जैसे बैठे – बैठे पैर हिलाना , कलम या पेंसिल के उपरी भाग को दांत से दबाना , चाभी के गुच्छे को नचाना , भाषण देते समय किसी शब्द को बार बार दुहराना आदि करता है | इन सांकेतिक क्रियाओं का अर्थ तो व्यक्ति खुद भी नहीं समझता पूछने पर बताता है “ऐसी ही” परन्तु फ्रायड के अनुसार

निश्चित रूप से इन हरकतों द्वारा अचेतन की दमित इच्छाएं हैं। उन्होंने एक बार यह देखा कि एक विवाहित महिला अंगुली से अंगूठी को बार बार निकालती थी तथा भीतर कर देती थी पूछने पर की वह ऐसा क्यों कर रही है, उसने कहा “ऐसी ही” परन्तु विश्लेषण करने पर पता चला कि वह महिला अपने पति को कुछ कारणों से तलाक देना चाहती थी परन्तु सामाजिक एवं नैतिक कारणों से वह ऐसा करना उचित नहीं समझती थी। फ्रायड के अनुसार अंगूठी को उँगली से खिसका कर निकलने की क्रिया द्वारा पति को परित्याग करने तथा पुनः उस अंगूठी को उँगली से भीतर करने की क्रिया द्वारा नैतिक एवं सामाजिक बंधनों के कारण पति को परित्याग नहीं करने के विचारों का संकेत मिलता है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि हमारे सामान्य जीवन की गलतियाँ या भूलें जो स्पष्टतः बेतुकी एवं निरर्थक दीख परती हैं सचमुच में निरर्थक नहीं होती हैं। इन भूलों एवं गलतियों द्वारा अचेतन मन की अतृप्त इच्छाएँ एवं विचारों की अभिव्यक्ति होती है। अतः मनोवैज्ञानिक दृष्टि कोण से दैनिक जीवन की ऐसी भूलें महत्वपूर्ण एवं सार्थक होती हैं।